पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.04.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-22 बैसाख-2082 दयानन्दाब्द 201 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2025 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.04.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का किया अभिनन्दन

हमें भारतीय संस्कृति पर गर्व होना चाहिए –रेखा गुप्ता मुख्यमंत्री दिल्ली

दिल्ली की नवनिर्वाचित मुख्यमन्त्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी का अभिनन्दन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, वेद प्रकाश आर्य, प्रवीण आर्या व रामकुमार सिंह आर्य। द्वितीय चित्र में मनीश गुप्ता (मुख्यमन्त्री का पतिदेव) का अभिनन्दन।

रविवार 30 मार्च 2025 ,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल ने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से भेंट कर नववर्ष विक्रमी की बधाई दी कि उनके कुशल नेतृत्व में दिल्ली में विकास का कार्य और आगे बढ़ेगा। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने नव वर्ष विक्रमी संवत 2082 की बधाई देते हुए कहा कि हमें अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व करना चाहिए और आर्य समाज के 150 वे स्थापना दिवस पर उन्होंने आशा व्यक्त की पहले से अधिक आज आर्य समाज की आवश्यकता है आर्य समाज समाज निर्माण के कार्य को गति देगा। साथ ही आर्य समाज अशोक विहार दिल्ली के कार्यक्रम में बोलते हुए केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज राष्ट्र वादी संगठन है हम देश भक्ति की भावना को युवा शक्ति जागृत करेगें। प्रवीण आर्य पिंकी के मधुर भजन हुए। प्रमुख रूप से महेन्द्र भाई, वेद प्रकाश आर्य, रामकुमार आर्य, आस्था आर्य, सुरेश आर्य, प्रेम सचदेवा, जीवन लाल आर्य,आशा भट्टनगर आदि उपस्थित थे।

आर्य समाज अशोक विहार फेज–1, दिल्ली में विक्रम संम्वत कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए अनिल आर्य व द्वितीय चित्र में प्रेम सचदेवा का स्वागत करते हुए अनिल आर्य, कुंदन लाल, आशा भटनागर व प्रवीण आर्या।

डॉ. गंगाशरण आर्य सम्मान समारोह सम्पन्न

रविवार 6 अप्रैल 2025, वैदिक विद्वान डॉ. गंगाशरण आर्य जो कि एम्स नई दिल्ली से सेवा निवृत्त हुए उनके सम्मान में एक भव्य समारोह सामुदायिक केंद्र शाहबाद मुहम्मद पूर, नई दिल्ली में आयोजित किया गया इस अवसर पर दिल्ली ही नहीं अपितु बाहर से भी आर्य प्रेमी सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य का उन्होंने अभिनंदन किया. कुशल संचालन सत्यदेव सोलंकी ने किया। प्रमुख रूप से आर्य युवा सन्यासी स्वामी आदित्य वेश जी, कन्हैया लाल आर्य, जगवीर सिंह आर्य,राजेश आर्य, भोपाल सिंह आर्य,सुशील आर्य,प्रवीण आर्य पिंकी आदि उपस्थित थे।

आर्यसमाज का सार्वभौमिक कल्याणकारी लक्ष्य एवं उसकी पूर्ति में बाधायें

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्यसमाज का उद्देश्य संसार में ईश्वर प्रदत्त वेदों के ज्ञान का प्रचार व प्रसार है। यह इस कारण है कि संसार में वेद ज्ञान की भांति ऐसा कोई ज्ञान व शिक्षा नहीं है जो वेदों के समान मनुष्यों के लिए उपयोगी व कल्याणप्रद हो। वेद ईश्वर के सत्य ज्ञान का भण्डार हैं जिससे मनुष्यों का इहलौकिक एवं पारलौकिक जीवन सफल होता है। आज भी जब हम पौराणिक मत और संसार के अन्य सभी मतों पर दृष्टि डालते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि संसार में ईश्वर, जीव व प्रकृति के सत्यस्वरूप के प्रति भ्रम की स्थिति है। इस कारण मनुष्य जाति के हित की दृष्टि से यह परम आवश्यक है कि संसार के एक–एक मनुष्य में वेदों का प्रचार व प्रसार हो जिससे सभी मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को जान व समझ सकें और फिर उद्देश्य के अनुरूप वेदों द्वारा बताये गये साधनों का प्रयोग करके अपना जीवन व्यतीत करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर जीवन को सफल बना सकें। संसार में ईश्वर, जीव व प्रकृति विषयक सत्य ज्ञान की कमी को अपने समय उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द दण्डी जी ने अनुभव किया था और उसे उन्होंने अपने शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती को अनुभव कराया। सन् 1863 में गुरू दक्षिणा के अवसर पर स्वामी विरजानन्द जी ने स्वामी दयानन्द से अनुरोध किया था कि वह स्वदेश व विश्व के कल्यार्थ अपना शेष जीवन सत्य वा वेदों के प्रचार में व्यतीत करें। इसका अर्थ था कि वह असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन करके सत्य ज्ञान वेदों का प्रचार करें। गुरू की आज्ञा के अनुसार स्वामी दयानन्द जी ने संसार के सभी मनुष्यों किंवा प्राणीमात्र के कल्याण के लिए वेदों के सत्य वा यथार्थ स्वरूप एवं उनकी प्राणी मात्र की हितकारी शिक्षाओं का प्रचार व प्रसार किया।

हम सभी जानते हैं कि आजकल संसार में जितने भी मत–मतान्तर प्रचलित हैं वह विगत 500 से लेकर लगभग 2500 वर्ष के अन्दर अस्तित्व में आये हैं। इससे पूर्व संसार में केवल वैदिक मत ही प्रचलित था। यह वैदिक मत सृष्टि के आरम्भ में अब से लगभग 1 अरब 96 करोड़ वर्ष पूर्व ईश्वर द्वारा वेदों का ज्ञान दिये जाने के साथ आरम्भ हुआ था और अबाध रूप से अब से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत काल तक सारे संसार में प्रवृत्त रहा। महाभारत के भीषण युद्ध में भारत की सभी धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्थायें अस्त–व्यस्त हो गईं थी जिसके कारण भारत एवं विश्व में अज्ञान फैल गया था। इस अज्ञान का परिणाम ही अन्धविश्वास एवं कुरीतियों का प्रचलन देश व संसार में होना है। महाभारत काल के बाद अज्ञान बढ़ता रहा और विश्व में मनुष्य समुदाय में लोगों का जीवन कष्टकर होता गया। इस बीच संसार में अनेक धर्मात्मा व समाज के शुभचिन्तक मनुष्यों का जन्म हुआ जिन्होंने अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर मनुष्यों की समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किए। जीव अल्पज्ञ है अतः कुछ उनकी अल्पज्ञता व कुछ उनके अनुयायियों की नासमझी के कारण संसार वेदों के ज्ञान तक पहुंचने में कृतकार्य न हुआ। प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द दण्डी जी ने वेदों के सत्यज्ञान को जाना तो परन्तु प्रज्ञाचक्षु होने के कारण वह इसका प्रचार–प्रसार नहीं कर सकते थे। वहीं स्वामी दयानन्द भी सत्य की खोज में विचरण कर रहे थे। उन्हें स्वामी विरजानन्द जी का पता चला तो वह सन् 1860 में लगभग 35 वर्ष की आयु में उनके पास मथुरा पहुंचे और उनसे उन्हें शिष्यत्व प्रदान करने की प्रार्थना की। उनका अध्ययन आरम्भ हुआ और लगभग 3 वर्ष की अवधि में वेदांगों की शिक्षा प्राप्त कर पूरा हो गया। इस प्रकार से महर्षि दयानन्द ने अपने बाल्यकाल से सत्य ज्ञान की खोज का जो प्रयास किया था वह सन् 1863 में आकर कुछ सीमा तक पूरा होता है। इसके बाद उन्होंने वेदों को प्राप्त कर उनके सभी मन्त्रों के अर्थों पर विचार किया जिससे उनकी विद्या पूर्ण हुई। स्वामी दयानन्द जी ने अपने विद्यागुरू की प्रेरणा व आज्ञा से देश व संसार से अज्ञान, अन्धविश्वास व कुरीतियां दूर करने का व्रत किया। यह ऐसा व्रत था कि जैसा विगत पांच हजार वर्षों के इतिहास में संसार में किसी ने नहीं लिया था। उन्होंने अविद्या दूर करने तथा विद्या के प्रचार की योजना बनाई और असत्य का खण्डन व सत्य का मण्डन आरम्भ कर दिया। हम यह भी पाते हैं विगत 5000 वर्षों में देश में विद्वान व महापुरूष तो अन्य भी कई हुए परन्तु जो वेदों का ज्ञान, योग्यता व विद्वता महर्षि दयानन्द में थी, वह उनके पूर्व व पश्चातवर्ती किसी महापुरूष में नहीं थी।

अपने गुरू को दिए वचन को पूरा करने के लिए महर्षि दयानन्द ने देश का भ्रमण कर समाज में प्रचलित अन्धविश्वास व पाखण्डों का अध्ययन किया। यह कार्य वह गुरू के पास अध्ययनार्थ आने से पूर्व भी करते रहे थे। उन्होंने भारतीय व विदेशी मत–सम्प्रदायों व उनकी धर्म पुस्तकों का भी अध्ययन किया। अपने अध्ययन के आधार पर वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कि संसार से संबंधित सम्पूर्ण सत्य केवल वेदों में ही है। अन्य सभी मतों में कुछ सत्य व कुछ व अधिक असत्य वा अविद्या है। उन्होंने यह भी जाना कि नाना मतों की परस्पर विरोधी शिक्षाओं के कारण संसार में विभिन्न मतों के लोग आपस में लड़ते रहते हैं जिससे उनका यह मनुष्य जीवन व्यर्थ हो जाता है। यह मनुष्य जीवन ईश्वर के द्वारा आपस में लड़ने व मरने के लिए नहीं मिला है अपितु सत्य के अनुसंधान तथा वेदानुसार जीवन व्यतीत करने के लिए मिला है जिससे मनुष्य सत्य को जान व पहचान कर सत्य का आचरण कर जीवन के चार पुरूषार्थों धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करें। अपनी वेद विषयक मान्यताओं के अनुसार स्वामी दयानन्द जी ने अपना जीवन बनाया और संसार में डिन्डिम घोष किया कि ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदों का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना संसार के सभी आर्यों वा मनुष्य मात्र का परमधर्म है।'' उन्होंने यह भी प्रतिपादित किया कि वेद सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा द्वारा सबसे अधिक पवित्र चार ऋषि आत्माओं को दिया गया ज्ञान है। अपने इस कथन को उन्होंने युक्ति व प्रमाणों से सिद्ध भी किया। अपना कार्य आरम्भ करते हुए पहले उन्होंने अपने देश के सभी मतों की परीक्षा कर उनका सुधार करने का प्रयास किया। इस प्रयास में उन्होंने मौखिक उपदेश व प्रवचन आदि किये और इसके साथ अज्ञान, अन्धविश्वास के अन्तर्गत ईश्वर की सत्य उपासना के स्थान पर की जाने वाली मूर्तिपूजा आदि वेदविरुद्ध उपासना पद्धतियों का खण्डन किया। वह हरिद्वार व ऐसे अन्य सभी धार्मिक स्थानों को जीवन के लिए लाभप्रद अर्थात् तीर्थ नहीं मानते थे अपितु इसे भी अन्धविश्वास व पाखण्ड मानते थे। अपने विवेक व वैदिक ज्ञान से उन्होंने जाना कि अवतारवाद, किसी एक का ईश्वर का सन्देशवाहक होना, किसी एक का ईश्वर का पुत्र कहलाना जैसी मान्यतायें भी असत्य, भ्रामक व वेदविरूद्ध हैं। फलित ज्योतिष, बालविवाह, जन्मना जाति व्यवस्था, सामाजिक विषमता तथा छुआछूत आदि का भी उन्होंने तर्क व प्रमाणों के साथ खण्डन किया। वह द्विजों के समान ही स्त्री व शूद्रों की शिक्षा के समर्थक थे तथा उन्होंने समाज के इस वंचित वर्ग को वेदाध्ययन का अधिकार वेदमन्त्र प्रमाण प्रस्तुत कर दिया। मूर्ति पूजा पर उनका 16 नवम्बर, सन् 1869 को काशी के लगभग 30 शीर्षस्थ पण्डितों के साथ किया गया शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है जहां वह सब मिलकर भी मूर्तिपूजा को वेद सम्मत व तर्क युक्तियों से सिद्ध नहीं कर सके थे।

महर्षि दयानन्द ने कुछ सज्जन पुरूषों के परामर्श से सन् 1875 में सत्यार्थप्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ की रचना भी की जिसमें उन्होंने अपनी वेद विषयक प्रायः सभी मान्यताओं का प्रकाश किया है। देश व विश्व में जितने भी मत–मतान्तर हैं, उनकी समीक्षा कर भी उन्होंने लोगों को यह बताया है कि सभी मतों में अज्ञान व अन्धविश्वास भरे पड़े हैं जिनको आंखे बन्द करके मानने से मनुष्य जीवन का कल्याण नहीं अपितु हानि होती है। यदि मनुष्यों को अपने जीवन का कल्याण करना है तो मत–मतान्तरों की भ्रान्तिपूर्ण मान्यताओं व सिद्धान्तों को छोड़कर सत्य ज्ञान व शिक्षाओं से युक्त वेदों की शरण में संसार के प्रत्येक मनुष्य को आना ही होगा जैसा कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक संसार के सभी मानव वेदों के अनुयायी रहे हैं। महर्षि दयानन्द अधिक से अधिक जितना कार्य कर सकते थे, उन्होंने किया। उन्होंने अपने मिशन की पूर्ति के लिए आर्यसमाज जैसे एक अद्भुद प्रभावशाली अपूर्व संगठन की स्थापना 10 अप्रैल, 1875 को प्रथम मुम्बई में की। वेदों के आशय को अधिक स्पष्ट करने के लिए उन्होंने वेदभाष्य सहित अनेक ग्रन्थों की रचना भी की जिनमें सत्यार्थ प्रकाश के अतिरिक्त ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरूणानिधि, संस्कृतवाक्यप्रबोध, भ्रान्तिनिवारण आदि अनेक ग्रन्थ हैं। इसके साथ ही उनका जीवनचरित, उनके प्रवचन, समस्त पत्रव्यवहार तथा भिन्न–भिन्न मतों के विद्वानों से वार्तालाप, शंका समाधान तथा शास्त्रार्थ आदि भी सत्य ज्ञान व विवेक कराने में महत्वपूर्ण व सहायक हैं। महर्षि दयानन्द सभी मतों के विद्वानों व अनुयायियों से मिलते थे, उनके प्रश्नों के उत्तर देते थे, उनसे उन्होंने मौखिक व लिखित शास्त्रार्थ भी किए और सभी के प्रश्नों का समाधान करते थे व किये। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने सत्य मान्यताओं के प्रकाशनार्थ संसार के सभी मतों की निष्पक्ष व पक्षपातरहित होकर समीक्षा भी की है जिससे कि सभी मतों के अनुयायी और विद्वान समान रूप से लाभान्वित हो सकें। लाभान्वित तो वह तभी हो सकते हैं कि जब वह अपने पूर्वाग्रहों को त्याग कर पक्षपातरहित होकर सत्य के प्रति पूरी तरह से समर्पित होकर उनका अध्ययन करें। ऐसा उन्होंने नहीं किया जिस कारण जो लाभ व लक्ष्य प्राप्त होना था, वह पूरा नही हो सका। इसके विपरीत यह हुआ कि सभी मत–मतान्तरों के लोग अपने हिताहितों में फंसकर दयानन्द जी के विरोधी हो गये और उनके जीवन का अन्त करने की योजनायें बनाने लगे। अनेकों बार उनको विष दिया गया। अनेक बार वह यौगिक क्रियाओं को करके उनको दिए विष के प्रभावों से बच गये। 29 सितम्बर, सन् 1883 को जोधपुर में वहां के महाराणा जसवन्त सिंह की वैश्या नन्हीं भगतन ने अपने कुछ पौराणिक व अज्ञात सहयोगियों की सहायता से उन्हें दुग्ध में विषपान कराया। उसके बाद उनकी चिकित्सा में भी असावधानियां की गईं। चिकित्सा भली प्रकार से नहीं की गई जिस कारण से 30 अक्तूबर, 1883 को दीपावली पर्व को अजमेर में उनका देहावसान हो गया और वह पंचभौतिक शरीर को छोड़कर अपने ज्ञान व विवेक से अर्जित मोक्ष अवस्था को प्राप्त हो गये। आर्यसमाज का उद्देश्य विश्व के धार्मिक व सामाजिक जगत से अज्ञान, अन्धविश्वास व कुरीतियों को दूर करना तथा उन्हें सद्ज्ञान की शिक्षा देना है जिससे कि वह मनुष्य जीवन को सफल करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सकें। यह काम अभी अधूरा है जिसे निरन्तर करते रहना है जब तक की उद्देश्य पूरा न हो जाये। आर्य समाज में भी विगत काफी समय से अनेक दुर्बलतायें आ गई हैं जिन्हें दूर करना होगा। मुख्य दुर्बलता संगठन का कमजोर होना है। यदि संगठन में सभी लोग अपने एषणाओं का त्याग कर कार्य करेंगे तो परिणाम अच्छे मिलेंगे। आर्य समाज की एक सबसे बड़ी बाधा यह भी है कि सभी मत–मतान्तरों के आचार्यों के अनेक प्रकार के स्वार्थ अपने अपने मत से जुड़े हुए हैं जिन्हें वह छोड़ना नहीं चाहते। सच्ची आध्यात्मिकता व सामाजिक ज्ञान में

(शेष पृष्ठ 4 पर)

युवा निर्माण से होगा राष्ट्र निर्माण ।। ओ३म् ।। हे कर्मशील मनुष्य तू कर्म कर

शिक्षाविद् डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कु. चौहान के सानिध्य में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का राष्ट्रीय शिविर

शनिवार 31 मई से रविवार 8 जून 2025 तक

विशाल आर्य युवक चरित्र व व्यक्तित्व निर्माण शिविर

स्थान : ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल सैक्टर-44, नोएडा

उद्घाटन समारोह **भव्य समापन समारोह**

शनिवार 31 मई, शाम 5 बजे से 7 बजे तक ✸ रविवार 8 जून, प्रातः 11 से 1:00 बजे तक

नयी पीढ़ी को मातृ-पितृ भक्त, ईश्वर भक्त एवं देशभक्त बनाने का संकल्प

राष्ट्रीय भावना, अनुशासित जीवन, नैतिक शिक्षा तथा युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा से ओतप्रोत करने तथा शारीरिक व बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने तथा उच्चकोटि के व्यायामाचार्यों द्वारा योगासन, ध्यान, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो-कराटे, बाक्सिंग, स्तूप आदि आत्मरक्षा सम्बन्धी शिक्षण के साथ-साथ वैदिक विद्वानों द्वारा सन्ध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा, भाषण कला, नेतृत्व कला व आत्मविश्वास के विकास हेतु शिविर का आयोजन।

आवश्यक नियम व निर्देश :- (1) इच्छुक नवयुवक 250 रू० प्रवेश शुल्क सहित प्रवेश पत्र भरकर **अंतिम तिथि 25** मई **25** तक अपना स्थान सुरक्षित करवा लें। (2) सभी शिविरार्थी 31 मई को दोपहर 1 बजे तक शिविर स्थल पर रिपोर्ट करें (3) पूर्ण वेशभूषा-सफेद टी शर्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद निक्कर, सफेद जुराब, सफेद कपड़े के जूते, कान तक की लाठी, टार्च, सन्ध्या यज्ञ की पुस्तक, कापी, पैन, कुर्ता पायजामा व ऋतु अनुकूल बिस्तर भी साथ लायें। (4) आवश्यक बर्तन थाली, कटोरी, मग, गिलास आदि भी साथ लायें (5) आयु 12 वर्ष से 18 वर्ष तक के युवक शिविर में भाग ले सकते हैं। (6) अनुशासन व दैनिक दिनचर्या प्रातः 4 बजे से रात्री 10 बजे तक का पालन करना अनिवार्य होगा। (7) परिषद् की ओर से भोजन व आवास प्रबन्ध निःशुल्क रहेगा।

बौद्धिक : सर्वश्री डॉ. जयेन्द्र आचार्य, रविदेव गुप्ता, यशपाल शास्त्री, गवेन्द्र शास्त्री, विमलेश बंसल, श्रुति सेतिया, ऋचा गुप्ता

शिक्षक गण: विजेन्द्र आर्य, पिन्टू आर्य, प्रदीप आर्य, गौरव सिंह, नसीब सिंह, मोहित आर्य, रोहित कुमार, जय आर्य, अखिल कोशिक

प्रबन्धकगण : प्रि. रेणू सिंह, अनिल चौहान, प्रताप सिंह, पिंकी आर्या, यज्ञवीर चौहान, कै. अशोक गुलाटी, कमल आर्य, गौरव झा, देवेन्द्र गुप्ता, संतोष शास्त्री, विरेश आर्य, अजेन्द्र शास्त्री, विवेक अग्निहोत्री, त्रिलोक आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, दिनेश आर्य

दानी महानुभावों की सेवा में अपील

आप जानते ही हैं कि इस विशाल रचनात्मक आयोजन में नौ दिन तक तीन समय के प्रातः राश तथा भोजन प्रबन्ध पर हजारों रूपये व्यय हो जाता है जो कि आपके स्नेह व सहयोग से ही पूरा होना है। अतः आपसे अनुरोध है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अपनी ओर से, अपनी आर्य समाज या मित्रों की ओर से अधिक से अधिक सहयोग करवाने की कृपा करें। कृपया समस्त क्रास चैक/ड्राफ्ट **"केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली"** के नाम से भिजवाने की कृपा करें। आप ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइण्ड, मसाले, पाउडर दूध, सब्जी, दलिया के रूप में भी सामान भिजवाकर सहयोग कर सकते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि आप अपनी ओर से तथा अपने इष्ट मित्रों से भी अधिक से अधिक सहायता राशि भिजवाने की कृपा करेंगे ।

स्वागत समिति : सर्वश्री जितेन्द्र डावर, कपिल कुमार राय, राजकुमार भाटिया विधायक, राजू कोहली, पुनीत कोहली, जितेन्द्र नरूला, मायाप्रकाश त्यागी, डॉ. आर.के. आर्य, यशोवीर आर्य, चतरसिंह नागर, देवेन्द्र सैनी, रामकृष्ण तनेजा, ओम सपरा, अर्चना पुष्करना, के.एल. पुरी, अरूण बंसल, विनोद त्यागी, पूजा सलूजा, अजय पथिक, देवेन्द्र आर्य बन्धु, अविनाश बंसल, अमीरचन्द रखेजा, ब्रजेश गुप्ता, अशोक सरदाना, प्रेम सचदेवा, के.एल. वर्मा, प्रवीन तायल, प्रदीप गोयल, अनिल मित्रा, राजेन्द्र वर्मा, डॉ. गंगा शरण आर्य, रवि चड्डा, अरुण विनायक, ओ.पी. पांडेय, सुरेन्द्र शास्त्री, सुरेन्द्र गुप्ता, कै. रूद्र सैन सिंधु, ममता शर्मा, कृष्णा पाहुजा, अमरसिंह सहरावत, कौशल्या रानी, रमेश गाडी, डा. गजराज सिंह आर्य, संजीव महाजन, संगीता गौतम, रमा-यशपाल चावला, डॉ. रचना चावला, विद्योतमा झा, प्रो. करूणा चांदना, सुनीता बुग्गा, राकेश चोपड़ा, संजीव सिक्का, नरेन्द्र आर्य सुमन, रमेश छाबड़ा, अशोक जेठी, कस्तूरीलाल मक्कड़, डालेश त्यागी, ज्योति ओबराय, अंजू जावा, आदर्श आहूजा, विरेन्द्र आहुजा, डिम्पल भंडारी, सीमा ढींगरा, यशपाल आर्य, इन्द्रजीत महाजन, सहदेव नांगिया, वीरेश भाटी, चन्द्रमोहन कपूर, प्रि. अंजु महरोत्रा, हर्षदेव शर्मा, अशोक गुप्ता, स्वदेश शर्मा, राजेश मेहन्दीरत्ता, आर.पी. सूरी, के.के. यादव, सुरेश आर्य, सुशीला गम्भीर, धर्मपाल परमार, उर्मिल-महेन्द्र मनचन्दा, बलदेव गुप्ता, सी.ए. हंसराज चुघ, विपिन मित्तल, मधु सिंह, रजनी गर्ग, डॉ. विपिन खेड़ा, पुनीता चौधरी, मंजुला कुकरेजा, महेन्द्र जेटली, संतोष वधवा, अमरनाथ बत्रा, विजय कपूर, सुशील बाली, निर्मल जावा, अतुल सहगल

निवेदक

अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	आनन्द चौहान शिविर संरक्षक	प्रवीन आर्य/सुरेश आर्य राष्ट्रीय मंत्री	ठाकुर विक्रम सिंह मधु भसीन गायत्री मीना	अजय चौहान योगराज अरोड़ा मे.जन. आर.के.एस. भाटिया
महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री	दुर्गेश व रामकुमार आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	देवेन्द्र भगत राष्ट्रीय मंत्री	अरुण अग्रवाल आनन्द प्रकाश आर्य विकास गोगिया	कर्नल कर्ण खर्ब कर्नल संजय खरबंदा रामलुभाया महाजन
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	अरूण आर्य, शिविर प्रबन्धक	सौरभ गुप्ता राष्ट्रीय संगठन मंत्री	वेदप्रकाश आर्य स्वागताध्यक्ष	डॉ. डी.के. गर्ग स्वागताध्यक्ष

कार्यालय: आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, फोन : 9810117464, 9013137070, 9818530543, 9971467978

YouTube aryayuvakparishad Email: aryayoughn@gmail.com

join - http://www.facebook.com/group/aryayouth • aryayouthgroup@yahoogroups.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 708वां वेबिनार सम्पन्न

नव विक्रमी संवत का महत्व पर गोष्ठी सम्पन्न

भारतीय संस्कृति की पहचान विक्रमी संवत से है –आचार्य श्रुति सेतिया

सोमवार 31 मार्च, 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'नववर्ष विक्रमी संवत' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल 707 वाँ वेबीनार था। वैदिक विदुषी आचार्य श्रुति सेतिया ने कहा कि हिंदू नव वर्ष का आरंभ चैत्र शुक्ल प्रतिप्रदा से होता है। वसंत ऋतु के आगमन का संकेत मिलता है और वातावरण खुशनुमा एहसास कराता है। ब्रह्म पुराण के अनुसार सृष्टि का आरंभ इसी दिन हुआ था। संवत्सर चक्र के अनुसार सूर्य इस ऋतु में अपने राशि चक्र की प्रथम राशि मेष में प्रवेश करता है। भगवान श्री राम का राजभिषेक, नवरात्र स्थापना, गुरु अंगददेव प्रगतोत्सव, आर्य समाज स्थापना दिवस, संत झूलेलाल का जन्मदिवस, युगाबद संवत्सर का प्रथम दिन से सब नववर्ष के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हैं। आधुनिक सभ्यता की आंधी दौड़ में समाज का एक वर्ग इस पुण्य दिवस को विस्मृत कर चुका है। आवश्यकता है इस दिन के इतिहास जे बारे में जानकारी लेकर प्रेरणा लेने का कार्य करें। भारतीय संस्कृति की पहचान विक्रमी संवत् से है, न कि अंग्रेजी नव वर्ष से। हम अपनी संस्कृति और वीरों के बलिदानों को ना भूलें। अभी भी समय है सब को मिलजुल कर प्रयास करना चाहिए ताकि हम अपनी भारतीय संस्कृति को संरक्षित रखने के लिए एक जुट हो। आओ हम हिन्दू नव वर्ष को धूम धाम से मनाएं और आपसी भाईचारे और प्रेम को विश्व भर में ले जाए। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री कृष्णा पाहुजा व अध्यक्ष अनिता रेलन ने भारतीय संस्कृति की महत्ता पर विचार। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया और प्रदेश अध्यक्ष परवीन आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, जनक अरोड़ा, कमला हंस, सुनीता अरोड़ा, सुदर्शन चौधरी प्रतिभा कटारिया आदि के मधुर भजन हुए।

श्रद्धा सुमनः माता लाजवंती आर्य का निधन

फरीदाबाद, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सत्य भूषण आर्य की पूज्य माता श्रीमती लाजवंती आर्य का निधन हो गया। श्रद्धांजलि सभा बुधवार 9 अप्रैल 2025 को किसान भवन सेक्टर 16, फरीदाबाद में सम्पन्न हुई। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य, कन्हैयालाल आर्य, प्रो. नरेंद्र आहूजा विवेक, जितेन्द्र तायल, ओम सपरा, एडवोकेट, पी के मित्तल, हरिओम शास्त्री, मर्केन्द्र कुमार, डॉ. गजराज सिंह आर्य, सुधीर बंसल , जितेंद्र सिंह आर्य, सतपाल रहेजा, सुधीर कपूर, ईश आर्य (हिसार), अशोक शास्त्री, बिजेन्द्र शास्त्री, विमला ग्रोवर आदि ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

जम्मू आर्य युवा शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में **विशाल आर्य युवा शिविर सोमवार 9 जून से रविवार 15 जून 2025** तक आर्य समाज जानी पुर कालोनी जम्मू में आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक युवक सम्पर्क करे, **कपिल बब्बर**, संयोजक– मो. 9906232397

तपोवन देहरादून चलो

वैदिक भक्ति आश्रम तपोवन देहरादून का **वार्षिक ग्रीष्म उत्सव** 14 मई से 18 मई 2025 तक होगा। सभी आर्य जन सादर आमंत्रित हैं स्थान बुकिंग के लिए पूर्व सूचना दे –प्रेम प्रकाश शर्मा , मोबाइल–9412051586

परिषद की बैठक 20 अप्रैल को होगी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की विशेष बैठक रविवार 20 अप्रैल 2025 को दोपहर 3.30 बजे मुख्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती पुरानी सब्जी मंडी दिल्ली में होगी। बैठक में आगामी योजनाओं व ग्रीष्म कालीन शिविरों की तैयारी पर विचार किया जाएगा। सभी प्रदेश अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष, शिक्षकगण समय पर पहुंचे।

अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महासचिव **धर्मपाल आर्य,** राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

(पृष्ठ 2 का शेष)

उनकी प्रवृत्ति नहीं है। अतः इसके लिए वेदों के सत्यस्वरूप व उसकी प्राणीमात्र की हितकारी शिक्षाओं सहित मनुष्य जीवन के लक्ष्य व उनकी प्राप्ति के साधनों का अधिकाधिक व्यापक प्रचार करना होगा। सत्य की अन्ततः विजय होती है। सत्य के समान अन्य कुछ बलशाली नहीं है। सत्य के सामने असत्य अधिक समय तक टिक नहीं सकता। यह भी सत्य है कि बिना पुरूषार्थ, तप व बलिदान के सत्य विजयी नहीं होता। अतः आवश्यकता संगठित रूप से प्रचार रूपी सम्यक पुरूषार्थ की है। चरैवैति चरैवति को सम्मुख रखते हुए यदि सभी वेदानुयायी अपने जीवन को प्रचारमय बनायेंगे तो ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' और विश्ववारा वैदिक संस्कृति का लक्ष्य भविष्य में प्राप्त हो सकता है। इस लेख के माध्यम से हमने आर्यसमाज के उद्देश्य व इसके कर्तव्य की ओर संकेत किया है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह सभी मनुष्यों के हृदयों में सत्य के ग्रहण और असत्य का त्याग करने की प्रेरणा करें। सभी वेदों का अध्ययन कर असत्य का त्याग कर अपने जीवन को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग पर चलायें।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970